



श्रीगणेशायनमः॥ अथ संकट  
मोचनलिव्यते॥ सर्वेथा॥ वा ।  
लसमैरविलीलिलियो॥ तव  
तानद्गलोकभयोअधियारो  
यत्तमथ्योहविदेतभयोयद्द

संकटकाहूपैजातनटारो॥  
देवनजायकरीबिनतीतव  
देवनकोतुमसंशोनिवारो॥  
कोनाहिजानतहैजगमै॥ यह  
शंकटमाचननामतिहारो॥ १॥

बालिकेनासकपीसवसेतिहिं  
जातमहाप्रभुपंथनिहारो॥चो  
कि महाडरजानिकियोतव॥  
चारिहुकोंनउपायविचारो॥  
करिद्विजरूपलेश्रायेमहा॥प्र

भुसोतुभतासुकोसंकटद्वारे॥  
कोनाहिजानतहेजगामें॥ यह  
संकटभाचननामतिद्वारे॥  
२॥ बाणलगेयोउरलक्ष्मणकैत  
व॥ प्राणतजेसुतरावणमारो॥

लैगृहवैदसुयेतसमेत॥ जुना  
वसिखलौंगिरिआननिवारो॥  
लायसजीवनतुमहनुमानस  
लक्ष्मणकेतुमश्राणउवारो॥ को  
नहिजानतहैजगमेंयह॥ संक

टमोचननामतिहारो॥३॥ अं  
गदकेसंगकासश्चनेक॥ गये  
सियकोश्रति सोचनिवारो॥ जी  
वतनामचहौहमसौं जु॥ विना  
सुधिलैइतकौं पशुधारो॥ हारथ

केतटसिंधुसवै॥लैआयेसिया  
सुधिप्राणपियारो॥कोनहि  
जानतहेजगमैं॥यहसंकट  
सोचननासतिहारो॥ध॥राव  
एआसदयोसियकू॥जवरह



कहा कर शोक निवारो ॥ ता  
ही समै हनुमान महा प्रभु जा  
य महा राज नाच रमा रो ॥ माग  
त सीय अश्लेष कसौ आशि सोई  
प्रभु मुद्रिका दै दुख दारो ॥ कोन

हिजानत है जगमौ॥ यह संक  
ट मोचन नामति हारो॥ ५॥ रा  
वण जुहु अपावन कान॥ सुना  
ग का फांस सवै सिर डारो॥ श्रीर  
घु वीर स मेत सवै॥ दल माहि भ

योऽतिमं शयमारो॥ आनिय  
रोऽहिं कौहनुमानजृवंधन।  
काटिकैकष्टनिवारो॥ कोनहि  
जानत है जगमै॥ यह संकटमै  
चननामतिहारो॥ ६॥ वंधुसमे

तिजवैमहि रावणा॥लेखुनाथ  
पतालसिधारो॥देविहिंपूजिभ  
लीविधिसे॥बलिदेनदोउजन  
संत्रविचारो॥जायसहायभये  
तवही॥अहिरावणसेनसमेत

संहारो॥ कोनहि जानत है जग में  
मैं यह॥ संकट मोचन नामति  
हारो॥ ७॥ काज कियो बड़ लोग  
न को तुम॥ वीर महा प्रभु देखि  
विचारो॥ केतिक संकट मोहि।

गरीब को सो तुम सो नहि जात है  
टारो॥ वेग दहरो हनुमान महाय  
भुजो कछु संकट होय दहमारो॥  
को नहि जात त है जग में यह सं  
कट सो चनना मति दारो॥ ८॥ वा

लिकोत्रासकुसंगसुसंगानिव्या  
कुलदेहदसाविसराड्॥ वैठिवे  
चारिकरैगिरिऊपरश्रावतना  
कछुचित्तउपाड्॥ मनमैश्रनुमा  
नकिथोरयुनायकभेटभड्स।

हरीदुचिताई॥ इहीविधिमोरा  
कलेसहरोहनमानतुम्हेसिया  
रामदुहाई॥ टे॥ आनसयेनहि  
भौनसमेतगहेगिरिद्रोणदले  
बलजाई॥ व्योमसपथचलेअ



निश्चातरपुष्पकजानद्वतेतहं  
आर्दे॥ श्रौयधलायप्रबोधित  
कैतववैद्यजुर्कानउपायसद्वा  
र्दे॥ इहीविधिमारकलेसहरोह  
नुमानतुम्हेसियरामदुहार्दे॥ १॥

रामहिलैमहिशवणगोजववं  
धुदोउबलिदेवियजाई॥वान  
रभालुविहालयरेकहिजातन  
हीकशुव्याकुलताई॥ताही  
कोअंतकियोछिनसैभगवंत

हिश्रानिकर्पासमिलाई॥इ  
ह्रीविधिमेरकलेसहरोहनु  
मानतुम्हेसियरामदुहाई॥१॥  
लौघिपयोधिप्रबोधसियाश्र  
रुमेढाविभीषणकादुविताई॥

फेरियोँनसुतश्रायकह्रीजुसम।  
स्तविदेहसताकुसलाड्डे॥रावण  
कोमदमदेनकरिपुनिकीनेभर  
तसुयीसमुदाड्डे॥डह्रीविधि।  
मोरकलेसहरोहनुमानतुम्हे

सियरामदुहाड ॥ १२ ॥ रोगावियो  
गविदारणकोतवभालके श्रं  
कसै श्रंकगटैतै ॥ पुत्रप्रपौत्रस  
यापरिवारसखासवसागरसेतु  
बधैतै ॥ जोजनतैनचलैसगसै

अपराधकरैराजराजबढेते॥दा  
रिददोयमितैतुलसीहनुमान  
केपांचकवित्तपढेते॥१३॥श्री  
तुलसीदासकृतशंकटसोचनकवि  
तसंपूर्ण॥अथध्यानं॥ॐ॥श्लोक॥

उल्लेघिसिंधोःसलिलंसलीलं  
यःश्लोकवद्भिः॥जनकात्मजा।  
याश्चादायतेनैवददाहलंका॥  
नमातेशंजलिरांजनेयम्॥१॥  
अतुलितवलधामंस्वर्णशैला

भदेहं॥दनुजवनकृशानुंजानि  
नामाग्रगण्यं॥सकलगुणनिधा॥  
नवानराणामधीशं॥रघुपतिवर  
दूतंवातजातंनमामि॥२॥श्रंजना  
तेदनेवीरजानकीशेकनाशनं॥



कपीशमन्त्रहन्तावंदे लंकाभयं  
करमा॥ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ  
शनिदेवकी कथा लिख्यते ॥ एक  
उज्जीननगरी॥ जहानराजा वीर  
विक्रमादित्यराजकरै॥ बडोय

सात्मापरउपकारी॥आछीनी  
तिकोचलनहारो॥जाकाराजमे  
कोइदुयपावैनही॥परायादुय  
वास्तेश्रापणोद्रव्ययरचेश्राप  
दुयभुगतै॥सकलकासहाय

करै॥ एक समै राजा बैठौ शास्त्र।  
को कथा सुनै छे॥ सार समै श्रां  
शानि देवता की कथा नीसरी॥  
तब राजा सारा पंडिता पृछ्या॥  
अहो पंडितो नवगुह देवता हो

यछे॥जिनमैकुणसोदेवताव  
डोछे॥तवएकपंडितबोले॥  
महाराजश्रीसूरजदेवताबडो  
छे॥कश्यपराजाकोपुत्रछेश्रीस  
ूरजदेवताकाप्रकाशहुयासारा

ह्रीं देवता न को पूजन होय छै ॥  
दुसरो पंडित वाल्यो चंद्र देव व  
डा छै ॥ चंद्रमा ऊरौ सारी तपति  
बुझै छै अनेक श्रेयधि अठार  
ह भारवना सपती को पोषन

होयछे॥तीसरोपंडितबोल्हो  
मंगलदेवताबडोछे॥पृथ्वीको  
पुत्रछेलालवस्त्रपहरैछेलाल  
दानसौत्प्रिछे॥चौथोपंडित  
बोल्होमहाराजबुद्धदेवताबडो

छै॥ या कृपूज्या बुद्धि बढै छै॥ पां  
चवौं पांडित बोल्यो बृहस्पति दे  
वता बडो छै॥ सर्व देवता न को  
गुरु छै सर्व दुको दाता छै॥ छ।  
ठा पांडित बोल्यो महाराज शुक्र

देवता बडो छै॥ देयो राजा बलि कुं  
कौन पदी पढ़े चायो छै॥ सात वों  
पंडित बो ल्यो शनि देवता बडो छै  
काला बख पहरै छै॥ काला दान  
सुत्त प्रि होय छै पूजा करै जा कुंनि



हाल करै छै॥ नही पूजा करै जा  
कू महा दुष दे छै॥ आठवों पंडि  
त बोल्यो महाराज राह देवता ब  
डा छै॥ देयो चंद्रमा सूर्य कौ छि।  
पावै छै और ग्रहण करै छै॥ नवों

पंडित बोल्यो केतु देवता बडो  
छे॥ राहु का मस्तक को छे॥ याकी  
पूजा कियो रिडि बटै छे॥ ये सा  
री बार्ता पंडिता नै राजा वीर विक्र  
मादित्य सें कह्यो॥ तब राजा विक्र

मादित्यबोल्यो॥ और देवता तो  
सब शुद्ध है॥ पर शनि देवता के  
काला वस्त्र है॥ या को प्रबोध तो  
बड़ा है यां को स्वरूप देख्या पाछे  
मन में शक्ति दाय है॥ तब सा

गड्पंडितबोल्या॥महाराजड॥ ॥  
सांवातसुखसोंनहीकाटिजे॥स  
नीश्वरजीबडोदेवताछे॥जीकी  
रासिपरचोथे॥आठवेंबारवेंआ  
वेतौआवताहीमतिहीणकरे॥

देस छुड़ावै परदेस रावन क  
रावै ॥ ता संया की पूजा करी भ  
ली छै बडा बडारा जा सेवा क  
रै छै ॥ सर्व ग्रह शनि की वीनती  
करै छै ॥ या की कर निजर दुया

पाछे सर्वही न करै छै सर्व दुय  
भुगता वै हाथ पावयं डित क  
रावै॥ ता संया की पूजा की यां स  
र्व दुय हरि होय॥ ये वात पंडित  
न नै राजा विक्रमादित्य सें कहै

तवराजाविक्रमादित्यबोले  
येतौबातहसारासनमैनही  
आडे॥ येवारताकहताडंश्री  
शनिदेवताआकाससारग  
मैविवाणमैवैठजायछा॥ सो

आकासवाणीयां सृभायतवो  
ल्या॥ राजा विक्रमादित्यस्य हारी  
निंदा तै करी छे सो तो कूं जाऐन ॥  
परजाण कर अव फल भुगता ऊं  
रो॥ इतनी कह कर श्रीशनिदेव



ता आकाससारगमै जातो भ।  
यो॥ तव राजा की वार वीरा सि  
पै शानि देवता आये॥ जब चम  
त्कार होवा लारये॥ येक समै रा  
जा सभा समेत दरवार मै बैठा त

वयेकब्राह्मणदुर्वलआयो॥ब्रा  
ह्मणतीक्ष्णसहादुर्वल॥तबरा  
जाविक्रमादित्यबोल्याहोब्राह्म  
णदेवताथाकूजोदुषहोयसोसो  
संकहो॥मैंथाकोदुषदूरिकरु॥

तव ब्राह्मण बाल्ये ॥ महाराज मे  
रै धर चाला तो मै दुय का कहूँ ॥ त  
व राजा विक्रमादित्य राति मे ब्रा  
ह्मण कै धर गयो और पृच्छी ॥  
हो ब्राह्मण देवता तो कूँ का डे

कष्टछे सो मो संक है मै तेरो कष्ट  
काटना दूँगा ॥ तब ब्राह्मण कहो  
महाराज ये महाको कष्ट काटो  
गा तो या मै कष्ट पड़ेगा ॥ परश्वी  
परमेश्वर या को सहाय करै लो ॥

महाकावचनसत्यकारिजानि॥  
लीजा॥ तबराजाआपकेमहल  
आयोश्रीशनिदेवकोप्रकाश  
होवालाग्यो॥ राजाक्रियाहीन  
भयो॥ मंत्रीहीनभयोवचनही

नहोवालागो॥ राजाकाशरीरमें  
रोगउत्पन्नहोवालोगोतबसारा  
हीजाणीराजाबाबलोहोगयो॥  
तबराजाश्रीशनिदेवताकीपूजा  
करी॥ सोशनिदेवतानुष्टुमानहु

यानही॥ तव एका दिन राजा राति  
कुनि कसभा राते सछे डोपर  
देस बहतो फिरो॥ कोडे रिच्छा  
नही करै महा परेशान डोलै एक  
समे राजा मनी रास कांच पावती

नगरीमेंगयो॥ राजामनीरामरा  
जकरैसाहश्रीपतिसेठकाहा  
टऊपरजायवैठो॥ राजाछुधा  
वंतछेभोजनकोचिंताकरैछे  
श्रीपतिसाहकुंदयाआई॥ आ



पकै घर ले गयो ॥ और साहणी  
सूँक ही या पर देसी कूँ भोजन क  
रावो ॥ तब साणि नै भोजन क  
रायो और उत्तम राज हं सजाणे  
तब विन साली सोवन की छी ॥

तहाँ एक चित्रा मको हंस मटो छे  
साहण के सवा किरोड को हार  
पूटी कैट क्यो छे वा पूटी काठ  
काँछी ॥ ओर चित्रा मको हंस  
द्यों छे सो शनि देव तानै चित्र

मकोहंससरजीवनकरदीनो  
सोचित्रामकोहंसद्वारनिगले  
छै॥ राजासूतोसूतोदयैछैऔर  
चित्रामकोमोरद्वारनिगलगा  
यो तवराजाजाणीकि॥शनी॥

शुभदेवताकीनिंदामेंकरीछी  
सोशनिदेवताकीकुरनजरछे  
सोवरससाटासातभुगतएणा॥ये  
वातजासूकहूजाकामनमेंआवे  
नही॥याकलंकचोरीकोसोबूल

ग्यो॥ तव साणि नैहार देख्यो॥ पा  
यो नही॥ तव साणि नैश्रीपति से  
ठ संकाही महाराज मेरो द्वार या  
पर देसी नै लियो॥ तव श्रीपति  
सेठ्यार॥ जाकु बुलाय कर पूछी

तैंसाणिकोहारलीनोसोदेयाल  
तवरजाविक्रमादित्यबोल्हो॥में  
तोहारलीनोनही॥जवश्रीपति  
सेठनैंकहीतोकुंमारैला॥औरम  
नीरामकनैलेजायगातवरजा॥

विक्रमबोल्यो॥ मैतोहारदेख्यो  
बीनहीजोसाचीकहूंतोकोई  
कामनमैआवैनही॥ तबराजा  
कैयणीमारदीतोबीहारकबूल  
नही॥ तबराजाविक्रमकूमनीरा

मराजा कनै ले गया ॥ कहीं महा  
राज मेरो सवा किरौड को हारया  
परदेसी नै लीनो ॥ तव राजा मनीरा  
मन्याव करवाला गो सो न्याव उप  
जैत ही ॥ तव राजा का छत्र ऊपर श



नी देवता आवेळ्या ॥ जवराजा  
मनी राम कह्यो जावो या काहा  
थपाव काटि चौरंगो कर ॥ उजा  
ड मैनाय आवो ॥ तवराजा काहु  
कसु सो राजा विक्रम काहा थपा

बचौरंगाकरउजाडमेंनायआ॥  
याराजाबहुतदुखपायो॥तबएक  
तेलीनैदयाआईओरराजामनी  
रामसंजाकरअरजकरीकही॥स  
हाराजथेदयापालोनोथारीनरा

॥ री मैं एक चौरंगो महा दुय पावै छै  
मो नै दु क म करो तो ले आऊं ॥ त  
वरा जानै बी दया आई ॥ अरु क  
ही जा भाई तू वा को जा बतो कर  
वो कर ॥ तेली अ पणै घर ले आयो

अरुतेलणिसंकहीचौरंगाकूला  
योधूतववानैवेढोकराय्योज  
वतेलीसंराजाविक्रमबोल्यो॥तैं  
मेराबहुतजावताकिया॥मेकुण  
तरैतोसूंअएतरहूंगोथेकहौतो

थोकाँघोणाहाकबोकरुं॥ श्रै  
सैकडेदिनबीतगयाबैहोधा  
णीहाकबोकरै॥ वरससाततौ  
बीतगयाछःसहीनावाकीरहा  
तवरजाकाजीवसैयुसालीभई

राजा मनीराम की वेटी मन भोंव  
ती छी॥ सोऊनै सणी छी राजा वि  
क्रमादित्य बडो धर्मात्मा छै॥ व  
डो न्याव करै छै छः राग जाणै छै  
दीपक राग जो डै छै॥ तव मन भों

वर्तायापणध्यास्योपरणतौरा  
जाविक्रमादित्यकूपरणयेवा  
तीराजामनीरामनैखणासनता  
हीवाडुजीतियणैचढायदीनी  
तवराजाविक्रमअपणादिनदे

या॥यादिकियाउजीणनगरीसं  
चाल्याजवसोंवरससाततौबी।  
तगया॥सद्दीनाछःवाकीरहात  
वयेकदिनराजासरीरमेयुसाली  
हुईतवराजानैरागरंगकीविचारी



राजा मनीरास को बेटी मन्भाव  
ती काम हल कैनी चैतेली को घर  
छे ॥ जहां चौ रंगोर है छे तब एक  
दिन चौ रंगो दी पकरागा वै छे  
आधी रात कै समै ॥ सो सारा सहर

मैदीपक जुड़ गया दिवाली की ।  
सीराति हो गई । जब सत भांवती  
बोली श्री दासी ये दीपक राग को  
तगा वैछै । ताको ठीक पाइत वदा  
सी बोली बाई जी दीपक राग तोरा

जा विक्रम जाणै छै ॥ और कोर्ड  
जाणै नही सो राजा विक्रमादि  
त्य श्रेष्ठ ही छै ॥ वा पैशानि देवता  
की करन जहुहु छै तब वार्ड वा  
ली मै तो वरमा लाया लूगी ॥ सो ॥

वाइजीकीजीभमोहीशनिदेवतु  
ष्टमानहुया॥रातिवीतीपरभात  
हुईतवश्यापकीमातासूबाईक  
हीमोकूवरश्याप्तिकरोवरमाला  
घालेंगी॥येवार्तीराणीराजासूक

हीराजार्जाकबूलकीनी॥ देसदे  
सकाराजाबुलायानगरदुहा  
डेफेरी॥ साराहीनगरीकालोग  
वागसवैरजायवैठा॥ तबतेली  
बीबीरंगाकूलकरवैठ्योराजा

सनीरामकीवेटीमनभावतीवर  
मालालीनीसबकेदेयताचोरंगा  
केवरमालाघाली॥जबसबनेक  
हीवाड़ेजीचूकीतबवरमालाफे  
रिवाड़ेजीकूंदीनी॥तबफेरिवीव

रमालाचौरंगाकैहीघालीतव  
सागहीउठगया॥वाड्जेजीपरणा  
दीनीगावसैकोसाएकउजाडमे  
महलछा॥जहावाड्जेजीरायदी  
नीतववाड्जेजीचाकरीमेहाजर

है॥ आठों पहरे वा करी कर वो का  
रै॥ तव शनीश्वर जी तुष्ट मानहु या  
ज वराजा का जीव भें बहु तयु सा  
लीहु द्रु॥ शनीश्वर जी दर सण दि  
ये और कह्यो राजा तैं मेरी निंदा क



रंछी तात तो कुंडत ना दुयदि  
या ॥ तब राजा हाथ जोड़ और क  
ही महाराज आप तो देवता छो  
सर्व बात करवा जा छो ॥ मैं तो  
आपको सेवक छु ॥ महाराज की

यातिरमें आया सो मो कू स य दु य  
दिया ॥ त व श नी श्व र जी वो ल्या  
ये रा जा वा ब्रा ह्म ण के क ए का  
टो छो ॥ सो वा ब्रा ह्म ण तो कूं आ ।  
शी र्वा द दि यो छे ॥ ता की अ सां स

संतैरैऊपरसनजरिहुड्डे॥ अब  
तौकुंहाथपावदिया॥ इतनीक  
हताहीराजाकेहाथपांवहोगा।  
या॥ औरकहीराजातूपरदुषभं  
जनहारछैपरायोभलोचावैछै

जो तू सागै सो डूँडूँ ॥ तव राजा विक्र  
म बो ल्यो महाराज मेरै ऊपर संतुष्ट  
द्वया छोतौ या वर देवो ॥ जितनी  
मेरै ऊपर कूरन जहुँ ॥ इतनी प्र  
जा पै नै होय ॥ जव सनी श्री जी कहौ

हेराजा तेरा कहां सेंडत नो कष्ट  
नही काई कूं दूगो ॥ और हेराजा  
मेरी कथा काई नर नारी सुण सी  
तापै मैं बद्धत तुष्ट मान हो सी को  
इपी डित बाँचै ॥ ता कूं डत नो दुय

नहीं होसी॥ इतनी कह कैशनीश्च  
 र्जीतो आकासमारगकूपधारा  
 तवरातिवीतीपरभातदुर्दी॥ तवरा  
 जाजीमहलमें वैद्यावद्वतयुसीमें  
 इतनामें मनीरासकीवेटीमनभा

वती नै आ कै सलाम करी ॥ जै देवै  
तौ राजा कै हाथ पांव छे ॥ तव मन  
भाँवती बहूत युसी दुई ओर आ  
पकी माता कूँदा सी हाथ बुलाई  
फिर राणी जाकर राजा सँ मालुम ॥

करांतवसनीरामराजाअपणा  
जीवमेवदुतयुसीदुवो॥ओरवदु  
तदानपुन्यकियोसबहीकुंवदु  
तयुसीदुई॥ओरराजाअसवारी  
कराजाडकेमहलआयो॥तवरा



जाविक्कमादित्यकुंलेकरसहर  
कामहलनमैश्रायोतवसबही  
कुंबहुतयुसाहुडे॥ तवराजाजा  
णीयेमनुष्यनहीयेतौश्रोतार  
पुरुषछे॥ सर्वदायजादिया॥ हा

थी घोड़ा ऊँट पालकी ही रामोती  
लाल जवा रात बहुत सावखदी  
ना ॥ तब राजा विक्रमादित्य तेली  
कूँ बहुत द्रव्य दीनो ॥ और पिता की  
सीना डेतेली कूँ राख्यो ॥ फिर विक्र

सादित्यकी श्रुमनीरामकीमि  
जमानीश्रीपतिसेठनैकरा॥सब  
कूसाथलेकरजीमवागया॥ज  
ववाहीचित्रसालीमेंजीमवावै  
ह्या॥ऊठेईचित्रामकोहंसछोतव

सबकै देयता ही चित्रामको हंस  
हार उगलवाला गयो ॥ तब राजा वि  
क्रमबोल्यो देयो पंचोदहमारा दि  
नयोटा छ ॥ जवतौ चित्रामको हंस  
सहार निगल गयो ॥ आज हमारा

भलादिन आयात वयाहं सर्वा  
हारागलैछे ॥ मोकुं साडासात  
वरसकाशनी अरजी आयाछा  
सोमोमेंडतनावेयलाभुगताण  
औरलाछनलगवाया ॥ तवम

नीरामराजा विक्रम कै पावन  
पडेयो ॥ कहीं मेरी तक सीरमा  
फकरो ॥ तबराजा विक्रम सस  
रा का धणी मनुहार करी तबरा  
जामनी राम कह्यो ॥ धन्य मेरो ॥

भाग्यैसा राजा संसत मददुयो  
जवयेवात श्रीपति सेठनै सुणी  
तवराजा विक्रम कै पगा पडो ॥  
श्रीरकही महाराज मेरी चूक मा  
फ करो ॥ तवराजा विक्रम नै वह

तदिलासादिया॥तवश्रीपति  
सेठकैणककंन्यासूरतपाकछी  
सोराजाविक्रमादित्यकूपरणा  
दीनी॥बहुतदायजोदियो॥हा  
थीघोडापालकीहीरामोतीला



लश्रुजडाऊगहणादीना॥स  
वाकिरोडकोद्वारादियो॥वस्त्र  
अनेकदियेतवराजाविक्रनैम  
नीरामश्रीरुपतिसेठसंकही  
मोकूअवसायदीजे॥तौउजीण

नगरी कूं जावों॥ तब सब नैदाथः  
जो डकर कही महा राज को ईदि  
न तो डूटै ओ ग विराजो॥ तब राजा  
विक्रमादित्य कही राजा होकर  
विदा करो तब राजा मनी रास ओ

रथीपतिसेठनैराजीहोकेवि  
दाकिया॥ऊठासूकेचकिया  
उजाणनगरीनैपधार्या॥सब  
हीनैसुषपायो॥वाब्राह्मणकुं  
सबनैबहुतमालादियासागदे

वतानकी पूजा करी॥ नौगृह देव  
तानकी पूजा करी॥ नगर कालो  
गवाग बुलाया और कहीं मोकू  
साडा सात वरस को शनीश्वर  
जी आये छे॥ सो सबहीं सहाय

करी॥ अब यह कथा कोर्ड सुनै  
कहै पंडित न संवचावै॥ जीप  
निदेवता जीप्रसन्न होसी॥ ओ  
र दरसाण देसां जब सब नैर्ड क  
ही॥ हेराजा धन्य है तुम्हारी बु

द्विकों जो श्रेसी कह्यो ॥ अब कोई  
या कथा सुणै जो शनि देवता कू  
प्यारो छै ॥ कोइ नर नारी राजा प्र  
जा या वै सुणै ॥ सो एका दशी हू  
त कोइ नरो फल पावै ॥ ये कथा

कोई बाँचै जहाँ जहाँ सयर है  
यह सत्य कर जाण लीज्यो ॥ इ  
ति श्री शनीश्वर देवकी कथा सं  
पूर्णम् ॥ शुभम् ॥ ॐ ॥ भवतु

श्रीगणेशायनमः॥ अष्टशतली  
लालित्यते॥ मूरयतूतनधारि  
कैकहाकसायो॥ रामभजन  
विनजन्मगमायो॥ पशुज्योउ  
दरभरसायो॥ पायो लालश्रवै



रथ्यायोयो॥१॥रामभजनगति  
जाणांनाही॥भौंदृभूल्योधं।  
धामाही॥मेरीमेरीकरतौफि।  
ह्यो॥हारससरनकबहनाक  
ह्यो॥नारीसेतीनेहलगायो

कवहुनहिरदेशमहिलायो॥  
सतमायासोयरोपियारो॥कव  
हुनसमर्योसरजनद्वारो॥जो  
वनमदमातोअभिसानी॥घर  
घरभटकतसंकनमानी॥स्वा

॥ रथमाहो बहुदि सधा यो ॥ गो  
विंदगुनक बहुन हि गा यो ॥ प  
रं सनया यो रु वि मा नी ॥ क व  
ह हि र दै द या न आ नी ॥ अ से ही  
कर ते व्यो हा रा ॥ आ प न आ यु त

एणअहंकारा॥वाँध्योकालकियो ॥  
चौरंगा॥सुतवितनारीकोउनसं  
गा॥जोसुकरमकुकरमकीवा  
री॥सोअवचालैलारतुन्हारी॥ज  
मआगैलैठाडाकीया॥धर्मरायबू

ऊणकूलीया॥ कह्यौ जे ते किये  
कुका मा॥ कबहुन समुज्यो पूर  
एरा मा॥ जिन पानी सों पै दाकी  
या॥ नरख रूप हरितो कूंदीया॥  
ता पै भांतू मूरय अंधा॥ जवतू आ

योजमकेधंधा॥तैहरिकथासुनी  
नहिकाना॥तोतूजमसौनाही॥  
छाना॥साधुसंगमैकब्रह्मनरहो  
मुखतैरामनामनहिकह्यो॥सो  
हरिविनब्रह्मतैदुषपायो॥धर्म

राजयूकहि समुजायो ॥ हरिकी ॥  
भक्तिकरो नरनारी ॥ धर्मराय यों  
कहै विचारी ॥ सो कूं दोष न दीजो ॥  
कोई ॥ जैसा करै भुगत है सोई ॥ पु  
न्य पाप कूं न्या राखाने ॥ जो तू कर्म

करैसबजानूँ॥तेरेकर्मनोहिभुगता  
ऊ॥आदिपुरुषकीआज्ञापाऊँ॥सा  
हवकीआज्ञाहैमोकूँ॥महाकसो  
टीदेहूँतोकूँ॥घरीघरीकालेया  
लेहूँ॥कर्मदिकतेराभरदेहूँ॥इ



कहरिविनकोडनरयवारो॥ चित  
दैसुमरोसरजहारा॥ संकटमेंह  
रिलेतउवारी॥ निसदिनसुमरो॥  
नामसुगारी॥ रामानंदयोंकहिस  
मुजाई॥ हरिसुमर्याजमलोकन

